संस्कृत भाषा के सेवापूर्व और सेवारत शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

@[1] Dr. Devki Nandan Sharma, Principal, Maharaja Shri Surajmal T.T College, Rahimpur, Bharatpur, Raj.

deenuvs@gmail.com

शोध सार

शिक्षण में प्रौद्योगिकी का अविर्भाव विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के बढ़ते हुए प्रभाव एवं अधिगम के सिद्धान्तों तथा व्यवस्था उपागम के अनुप्रयोग द्वारा शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति एवं शिक्षण व्यवस्थाओं के इस सम्बन्ध में अपेक्षित प्रभाविता को ठोस आधार मिलता है प्रस्तुत शोध प्रपत्र में संस्कृत भाषा के सेवापूर्व और सेवारत शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृति का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन हेतु शून्य परिकल्पना "सेवापूर्व और सेवारत संस्कृत भाषा शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। " का निर्माण किया। न्यादर्श के रूप में 15 सेवापूर्व और 15 सेवारत शिक्षकों का चयन किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित सूचना प्रौद्योगिकी अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्षतः पाया कि संस्कृत भाषा के सेवापूर्व और सेवारत शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी की अभिवृत्ति के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कूट शब्दावलीः संस्कृत भाषा, सेवापूर्व, सेवारत शिक्षकों, सूचना प्रौद्योगिकी, अभिवृत्ति

प्रस्तावना

शिक्षण में प्रथम तकनीकी का उपयोग 1926 में अमेरिका में सिडनी एल. प्रेसी (Sidney L. Pressey) ने ओहियो राज्य विश्वविद्यालय में शिक्षण मशीन के निर्माण के रूप में आरम्भ किया। यह मशीन एक शिक्षण युक्ति (Tactics) के रूप में जाँच हेतु तैयार की गई। तदुपरान्त 1930–40 के दशक में लुम्सडेन और ग्लेसर महोदय ने शिक्षण के यन्त्रीकरण के अनेक अभ्यास किये, परन्तु 1954 मे बी. एफ. स्किनर् महोदय के द्वारा कृत पशुओं पर प्रयोगों के फलस्वरूप वास्तविक शिक्षण तकनीकी का जन्म हुआ जो कि अभिक्रमित अधिकम (Program Learning) के रूप में विकसित हुई।

इसके बाद ब्राडनमोर ने इंग्लैण्ड में अनेकानेक प्रयोग किये। अमेरिका और रूस की औद्योगिक क्रान्ति के कारण 1960 में तकनीकी का अत्यधिक विकास के परिणाम स्वरूप दृश्य–श्रव्य सामग्रियों का प्रचलन बढ़ा। सन् 1966 में अमेरिका विश्वविद्यालय के शिक्षा मनोविज्ञान एवं विज्ञान विभागों द्वारा शिक्षा तकनीकी की एक राष्ट्रिय परिषद् स्थापित की गई। व्यवहार तकनीकी के रूप में एमिडोन (Amidon) फलैण्डर्स, स्मिथ आदि पाश्च शिक्षाशास्त्रियों के नाम अविस्मरणीय है।

भारत में राष्ट्रिय शिक्षा अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) ने शिक्षा तकनीकी का एक नया विभाग उद्घाटित किया जिसमें दृश्य–श्रव्य सहायक सामग्री को शिक्षा तकनीकी विभाग में सम्मिलित किया।

1963 में इलाहाबाद में C.P.I. (Central Pedagogical Institute) में सेमिनार् आयोजित कर तकनीकी के अभिक्रमिताधिगम शाखा पर विशेष बल दिया गया। जिससे तकनीकी ज्ञान को अत्याधिक पोषण प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् सन् 1965 में I.A.E.T. (Indian Association of Education Technology) राष्ट्रिय स्तर पर संगठित किया गया। 1964–66 में शिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के अयोजन को आकाशवाणी तथा चलचित्रों के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया गया।

सन् 1980 में B.H.U. में I.A.E.T. की स्थापना हुई। सन् 1986 की नई शिक्षा नीति ने IGNOU की स्थापना तथा दूरदर्शन पर ज्ञानदर्शन तथा तरंग जैसे शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रसारणों ने शिक्षा जगत के समग्र कार्यक्रम को प्रभावित किया।

ज्ञान विस्फोट के वैश्विक प्रतिस्पर्धा वाले इस युग में अद्यतन रहने के लिए आज के शिक्षक को सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी के साथ अपने को जोड़ना अनिवार्य होता जा रहा है। इस बाध्यता के फलस्वरूप प्रत्येक शिक्षक को अपने शैक्षिक कार्यों के प्रभावी नियोजन एवं सम्पादन के लिए I C T की आवश्यकता पड़ती है।

इसके लिए हमारे शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों को अपने उपदकेमज तथा मनोवृत्ति में यथासंभव परिवर्तन लाना आवश्यक है। सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में जिसके द्वारा लाभ तथा प्रभावपूर्ण परिवेश का निर्माझा होगा कक्षा का तथा छात्रों के भी अच्छे ज्ञान के साथ समसामयिक विषयों का ज्ञान और उच्चतम प्रतिफल (Output) प्राप्त होंगे।

प्रचलित शिक्षा धारा को अद्यतन बनाये रखने का दायित्व शिक्षक का है और शिक्षक सूचना तकनीकी को जुड़े बिना अपने में परिवर्तन, परिवर्धन तथा परिष्करण नहीं कर सकता है। अब छात्रों की रूचियों में भी परिवर्तन हो रहा है। छात्र केवल व्याख्यान विधि से पढ़ाये गये पाठ से सन्तुष्टि का अनुभव नहीं करते उनकी जिज्ञासायें अपूरित रह जाती हैं। उनकी सृजनात्मकता में उपयोग तथा अद्यतन ज्ञान–विज्ञान से परिचय प्राप्त कर छात्रों में रचनात्मकता, सृजनात्मकता के विकास के साथ शिक्षा ग्रहण में भी रूचि विकसित होती है। अतः 'सूचना सम्प्रेषण तकनीकी' के महत्त्व को शिक्षा में नकारा नहीं जा सकता।

अन्त में हम कह सकते हैं कि शिक्षक अपने शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों के प्रभावी नियोजन, क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन हेतु सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर सकता है जो कि उसकी इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है।

यह इच्छा–शक्ति शिक्षक की रूचि एवं अभिवृति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी होती है जिसे इस शोध द्वारा जानने का प्रयास किया गया है।

समस्या कथन

"संस्कृत भाषा के सेवापूर्व शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।"

शोध के उद्देश्य

सेवापूर्व और सेवारत संस्कृत भाषा शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

सेवापूर्व और सेवारत संस्कृत भाषा शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्तियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा **सर्वेक्षण विधि** का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श चयन के लिए सेवापूर्व शिक्षक हेतु **गुच्छ चयन विधि** का एवं सेवारत शिक्षकों के लिए **सुविधा चयन विधि** का प्रयोग किया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों के अनुसार लिकर्ट–निर्धारण मापनी पर आधरित **सूचना प्रौद्योगिकी अभिवृत्ति मापनी** को शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

सेवापूर्व और सेवारत संस्कृत भाषा शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

सर्वप्रथम संस्कृत भाषा के सेवापूर्व और सेवारत भाषा शिक्षकों का निर्धारण मापनी में निरूपित पाँच श्रेणियों (पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत ,और पूर्णतः असहमत) में प्राप्त आवृत्तियों को प्रदान किये गये अंकों से गुणन के पश्चात प्रत्येक श्रेणी की आवृत्ति निकाली गई। तत्पश्चात् प्रतिशत में परिवर्तित करके सेवापूर्व और सेवारत भाषा शिक्षकों की प्राप्त आवृत्तियों को परस्पर तुलना की गई है। इसे तालिकाबद्ध तरीके से तालिका (1) में अंकित किया गया है।

क्र.सं.	श्रेणियाँ	सेवापूर्व शिक्षक	सेवारत शिक्षक
1	पूर्णतः सहमत (SA)	32.89%	27.33%
2	सहमत (A)	25.33%	26.88%
3	अनिश्चित (U)	10.88%	17.11%
4	असहमत (D)	14.44%	15.5%
5	पूर्णतः असहमत (SD)	16.44%	13.11%

तालिका (1) के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति के विषय में जहाँ एक ओर संस्कृत भाषा के सेवापूर्व शिक्षकों ने पूर्णतः सहमत 32.89% पर व्यक्त की है वहीं सेवारत शिक्षकों ने 27.33% पूर्णतः सहमति प्रदर्शित की, सेवापूर्व संस्कृत शिक्षकों ने 25.33% सहमति दिखाई जबकि सेवारत शिक्षकों ने सहमति 26.88% दिखाई, अनिश्चित श्रेणी में 10.8% सेवापूर्व संस्कृत शिक्षकों की तथा सेवारत शिक्षकों ने 17.11% अभिवृत्ति दिखाते हैं, असहमत संस्कृत सेवापूर्व शिक्षकों ने 14.44% और सेवारत संस्कृत शिक्षकों ने 15.55% अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं। पूर्णतः असहमत श्रेणी में सेवापूर्व संस्कृत शिक्षकों ने 16.44% व सेवारत संस्कृत शिक्षकों ने 13.11% अभिवृत्ति का प्रदर्शन किया है जिसके आधार पर सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का ही अवलोकन होता है।

प्रस्तुत विश्लेषण के माध्यम से संस्कृत भाषा के सेवापूर्व और सेवारत भाषा शिक्षकों का सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति समेकित प्राप्तांकों में प्रदर्शित आवृत्तियों के आधार पर उपलब्ध मध्यमान से तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसे तालिका (2) में स्पष्ट किया गया है।

संस्कृत भाषा शिक्षक	मध्यमान **M**	कुल संख्या **N**	प्रमाणिक विचलन **SD**	**D**	σ_D	**t** मान	**t** तालिका मान
सेवापूर्व	103	15	9.25	1.07	3.13	0.34	0.01—2.73
सेवारत	101.93	15	7.20				0.05—2.05

df = 28

उपर्युक्त तालिका को देखने से ज्ञात होता है कि सेवापूर्व और सेवारत दोनों वर्गों के शिक्षकों की संख्या 15 है तथा इनका प्रमाणिक विचलन क्रमशः 9.25 और 7.20 है। दोनों समूहों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर देखने के लिए t परीक्षण लगाया गया जिसका मान 0.34 आया। इस आधार पर सामग्री के लिए स्वतन्तत्रा स्तर 28 है जिसका 0.05 व 0.01 पर t तालिका मान क्रमशः 2.05 व 2.73 है। इससे प्रमाणित होता है कि t मान की वैल्यू t तालिका मान से कम है। अतः दोनों समूहों में सार्थक अन्तर नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन को और स्पष्ट रूप में आरेख के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

आरेख 1 संस्कृत सेवापूर्व शिक्षकों का पाँच श्रेणियों के आधार पर सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का प्रदर्शन

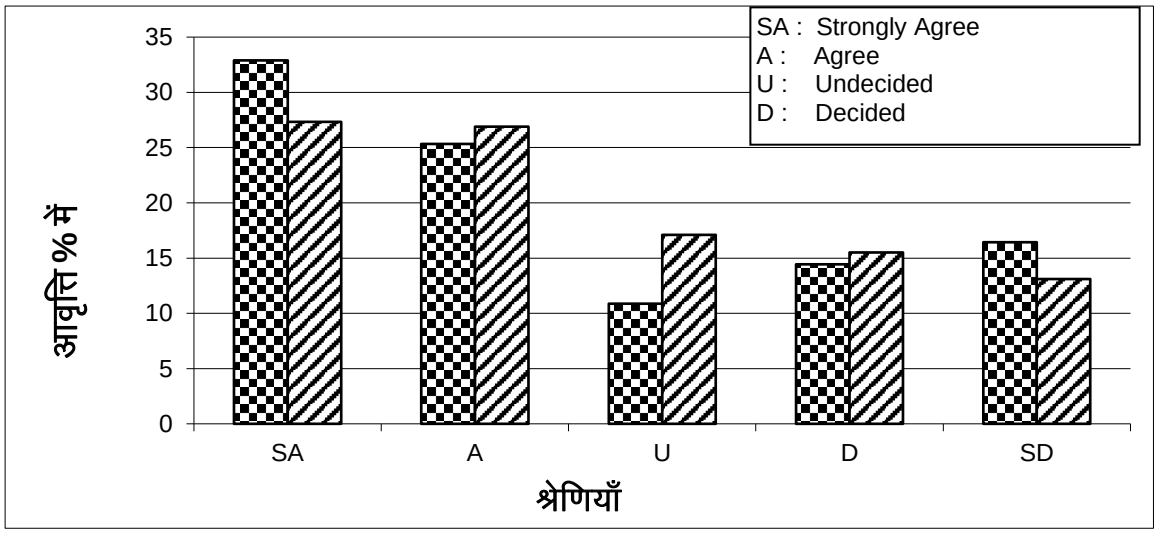

इस आरेख (1) को देखने से ज्ञात होता है कि पूर्णतः सहमत श्रेणी में सेवापूर्व संस्कृत शिक्षक, सेवारत संस्कृत शिक्षकों से अधिक अभिवृत्ति दिखाते हैं, लेकिन सहमत श्रेणी में सेवारत संस्कृत शिक्षक, सेवापूर्व संस्कृत शिक्षकों से ज्यादा अभिवृत्ति प्रदर्शित करते है। अनिश्चित व असहमत श्रेणियों में सेवारत संस्कृत शिक्षक सेवापूर्व संस्कृत शिक्षकों से आगे हैं, जबकि पूर्णतः असहमत श्रेणी में सेवापूर्व संस्कृत शिक्षक सेवारत संस्कृत शिक्षकों से अधिक अभिवृत्ति का प्रदर्शन करते हैं।

निष्कर्ष–

संस्कृत भाषा के सेवापूर्व और सेवारत शिक्षकों की सूचना प्रौद्योगिकी की अभिवृत्ति के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है यह ज्ञात करने के लिए t परीक्षण लगाया गया जिसका मान 0.34 आया। यह मान t मान विश्वास स्तर 28 के 0.05 व 0.01 विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः इस अन्तर को महत्तवपूर्ण नहीं माना जा सकता है। इसलिए सार्थक अन्तर न होने से यह परिकल्पना मान्य है।

सन्दर्भ

- Kalia Ashok, K. Levine, Tomar and Vij Sanjana, (2000) : "Computer Self confidence and Computer Experience in Relation to Computer related attitudes and Commitment to Learning", Journal of all India Association for Educational Research.
- P.K. McKinley, B.H.C. Cheng & J. Weng (2006): "Integrating Multimedia Technology into the Undergraduate Curriculum"

- D. Zhang (2005): "Interactive Multimedia based Learning a Study of Effectiveness", American Journal of Distance Education 19 (3), pp. 149-162.
- Debi Meena Kumari, (1989): "Developing and Testing the Effectiveness of programmed Learning material in the Syllabus of principles of Education in the B.T. Course of Guahati University", Ph.D. Thesis, Guahati University.
- Joshi Anuradh and Mahapatra BC, (1995) : "Effectiveness of Computer Software in Terms of Higher Mental Ability in Science". Indian Journal of Psychometry and Education Vol. 26 (2) 105-108.
- Aggarwal Y.P. and Mohanty Manisha, (1998) : "A Meta Analytical Study at India Research", Indian Educational review Vol. 32(2) 57-66.
- Narayanasamy M and Thangasamys, (2001) : "Study of Computer uses Among Teacher Educators in teaching training Institution in Tamil Nadu", Indian Journal of Open Learning Vol. 10 (1) 60-67.
- मगंल, एस. के., (2009) शिक्षा मोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग। प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- पाठक, आर. पी. (2011). उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पियर्सन, दिल्ली ।
- राय, गीता (2011). अधिगमकर्ता का विकास तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
- गुप्ता, डा. एस. पी. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998
- पाण्डेय, डा. के. पी. शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006
- सुखिया, एस. पी. तथा मल्होत्रा वी. पी. शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- तिवारी, डा. गोविन्द शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के मूलाधर, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- सिंह ए. के. शिक्षा में अनुसन्धान, पोइन्टर पब्लिशर्स, 2005
- पाण्डेय, के.पी. शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, अमिताश प्रकाशन, मेरठ
- कपिल, डा. एच. के. सांख्यिकी के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- गिलफोर्ड, जे.पी. फन्डामेन्टल स्टैटिस्टिक्स इन साइकालॉजी एण्ड एजुकेशन, मैक्ग्राहिल बुक कम्पनी, 1982